विचार बिन्दु

स्वयं को भेड़ बना लोगे तो भेड़िये आकर तुम्हे खा जायेंगे। –जर्मन कहावत

धनखड़ के साथ यह व्यवहार शोभनीय नहीं

उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड के द्वारा 21 जुलाई को त्यागपत्र देने के बाद न तो उनके बारे में कोई समाचार प्रकाशित हुआ है न ही किसी को यह पता है कि इस समय वह कहां पर हैं? सामान्यत: देश के उपराष्ट्रपति जैसे देश के द्वितीय सर्वोच्च सम्मानित पद पर रहे व्यक्ति की विदाई के समय एक औपचारिक विदाई समारोह तो होना ही चाहिए था। वैसे भी उपराष्ट्रपति, सत्ताधारी दल की पसंद से ही बनाए जाते हैं । जगदीप धनखड का त्यागपत्र जिन परिस्थितियों में हुआ वह अभी भी रहस्य के घेरे में है।

धनखड द्वारा पद छोड़ने के बाद जो घटनाक्रम हुआ है वह भी कम रहस्यमय नहीं है । इस घटनाक्रम ने कई प्रश्नों और आशंकाओं को जन्म दिया है। इनमें से कुछ का उल्लेख हम इस आलेख में करेंगे ।

धनखड ने पद मुक्त होने के बाद अभी तक कोई सार्वजनिक बयान नहीं दिया है। उन्होंने किसी भी नेशनल या सोशल मीडिया पर कोई साक्षात्कार भी नहीं दिया है। वे किसी सार्वजनिक या पारिवारिक समारोह में भी नहीं देखे गए हैं। सामान्यतया धनखड हर विवादास्पद विषय पर मीडिया में बयान देने के आदी रहे हैं। उपराष्ट्रपति जैसे महत्वपूर्ण पद से निवृत हुए व्यक्ति का अचानक इस तरह सार्वजनिक परिदृष्य से लुप्त हो जाना समझ से बाहर है।

पहले, यह समाचार आए थे कि उन्हें उपराष्ट्रपति का आवास छोड़ने के लिए कह दिया गया है। बाद में, सरकार ने इस बात का खंडन किया कि उन्हें ऐसा नहीं कहा गया है। किंतु, यह प्रश्न तो अभी भी बना हुआ है कि क्या वे अब भी उपराष्ट्रपति आवास में निवास कर रहे हैं अथवा उसे छोड़कर कहीं और चले गए हैं ? देश को यह जानने का तो हक है ही कि,उनके पुराने उपराष्ट्रपति वर्तमान में किस हालत में हैं और कहां पर हैं? क्या वे स्वस्थ हैं? क्या उनका इलाज चल रहा है? यदि हां, तो किस अस्पताल में?

धनखड़ अपनी बात को व्यक्त करने में बहुत मुखर और उत्सुक रहे हैं । राज्यसभा के सभापति के तौर पर भी उन्होंने कई बार लंबे-लंबे भाषण दिए जो असामान्य था। जो व्यक्ति अपने विचार व्यक्त करने के लिए इतना उत्सुक रहता हो, वह अचानक इतना खामोश हो जाए, यह बात गले उतरना बहुत कठिन है । धनखड़ के परिवार के किसी सदस्य का भी कोई वक्तव्य नहीं आया है । किसी ने न कोई टीवी इंटरव्यू दिया एवं न सोशल मीडिया का उपयोग इस उद्देश्य से किया। यह जिम्मेदारी केंद्र सरकार की बनती है कि वह धनखड के स्वास्थ्य के बारे में कोई बुलेटिन जारी करे क्योंकि उन्होंने इस्तीफा देने का कारण ही अपना खराब स्वास्थ्य बताया था।

क्या वे अस्पताल में भर्ती हैं ? क्या वे अपने घर में नजर बंद हैं? क्या वे किसी दूसरे घर में रहने चले गए हैं? चले गए हैं, तो किस शहर में? इन सब प्रश्नों का स्पष्ट उत्तर न मिलने के कारण अफवाहों का बाजार गर्म हो रहा है।

इसी दौरान, पूर्व राज्यपाल सतपाल मलिक की मृत्यु होने पर उनका बिना राजकीय सम्मान के अंतिम संस्कार कर देने से विभिन्न आशंकाओं को और बल मिला। जो व्यक्ति चार राज्यों का राज्यपाल रहा हो उसके साथ इस प्रकार का उपेक्षा पूर्ण व्यवहार कतई स्वीकार्य नहीं था। सरकार का कोई प्रतिनिधि भी उनके अंतिम संस्कार में शामिल नहीं हुआ। यह उल्लेखनीय है कि सतपाल मलिक भी धनखड की तरह जाट नेता थे । सतपाल मलिक ने जम्मू कश्मीर का राज्यपाल पद छोड़ने के बाद कई प्रकार के ऐसे प्रश्न सार्वजनिक रूप से उठाए थे जिनसे प्रधानमंत्री और गृह मंत्री की नीयत पर शक पैदा किया गया।स्वाभाविक रूप से यही कारण रहा होगा कि प्रधानमंत्री और गृह मंत्री की नाराजगी के कारण सतपाल मलिक को राजकीय सम्मान के साथ औपचारिक रूप से अंतिम विदाई तक नहीं दी गई।

सतपाल मलिक का एक वीडियो हाल ही में जारी हुआ है जिसमें उन्होंने अपनी बात को स्पष्ट करते हुए कहा है कि उनके पास केवल तीन-चार जोडी कपडे हैं और उनके पास कोई संपत्ति नहीं है, फिर भी उनके विरुद्ध सरकार द्वारा जांच एजेंसी के माध्यम से कार्रवाई की गई और उन्हें परेशान किया गया। अस्पताल से जारी किए गए इस वीडियो में सतपाल मलिक अत्यंत ही कमजोर दिखाई दे रहे थे। क्या राजनीतिक जीवन में शुचिता इतनी समाप्त हो गई है कि यदि किसी व्यक्ति की विचारधारा हमसे अलग हो या अलग हो जाए तो उस व्यक्ति के साथ इस प्रकार का उपेक्षापूर्ण और अपमानजनक व्यवहार किया जाएगा ?

कोई भी निष्पक्ष व्यक्ति, धनखड के राज्यसभा के सभापति के रूप में किए गए पक्षपात पूर्ण व्यवहार का समर्थन नहीं कर सकता, किंतु भारतीय संस्कृति में तो विरोधियों के साथ भी शिष्टाचार पूर्ण व्यवहार तो किया ही जाता है। गत 20 दिनों में न केवल धनखड की उपेक्षा की जा रही है बल्कि उन्हें सार्वजनिक दृष्टि से लगभग दूर ही कर दिया गया है । धनखड स्वयं स्वेच्छा से मीडिया से दूरी बनाए हुए हैं या उन्हें ऐसा करने के लिए बाध्य किया जा रहा है, इस बारे में केवल अनुमान ही लगाया जा सकता है ।

धनखड के साथ इस प्रकार का व्यवहार और भी आश्चर्य जनक इसलिए लगता है कि इन्हीं धनखड को भाजपा सरकार ने अचानक पश्चिम बंगाल का राज्यपाल और बाद में उपराष्ट्रपति के पद पर नियुक्त किया था ।

सतपाल मलिक का अंतिम संस्कार राजकीय सम्मान से नहीं करने पर एवं सरकार द्वारा किए जा रहे हैं व्यवहार की आलोचना भाजपा नेता कृष्ण कुमार जानू ने की, तो उन्हें पार्टी से निकाल दिया गया। ऐसी हालत में कौन धनखड़ से मिलने का प्रयास करेगा या उनके साथ किए जा रहे व्यवहार के बारे में सवाल करने का साहस करेगा?

पूर्व उपराष्ट्रपति के रूप में धनखड सभी उत्कृष्ट श्रेणी की चिकित्सा प्राप्त करने के अधिकारी हैं।

एक सामान्य राजकीय अधिकारी/ कर्मचारी भी सेवा निवृत्ति के बाद राजकीय व्यय पर चिकित्सा सेवा प्राप्त करने का अधिकारी होता है। जो व्यक्ति राज्यपाल और उपराष्ट्रपति रहा है, उसको श्रेष्ठ इलाज सुलभ कराने की जिम्मेदारी पूरी तरह केंद्र सरकार की है । अभी देशवासियों के लिए यह समझना कठिन है कि केंद्र सरकार अपनी इस जिम्मेदारी का निर्वहन क्यों नहीं कर रही है ? विभिन्न किसान नेता इस बारे में बयान भी दे रहे हैं कि धनखड को किसान नेता होने के नाते, किसानों की समस्याओं पर केंद्र द्वारा समुचित कार्यवाही नहीं करने पर उसकी आलोचना करने के कारण सरकार द्वारा प्रताड़ना का भागीदार बनाया गया है।

सरकार के उपेक्षा पूर्ण व्यवहार को तो सरकार की नाराजगी माना जा सकता है, चाहे वह कितना ही अनुचित क्यों ना हो, किंतु जगदीप धनखड एवं उनके परिवार की चुप्पी वास्तव में आश्चर्यजनक है। उनके ऊपर ऐसा क्या दबाव है कि वह पद छोड़ने के बाद अब भी न तो पद छोड़ने का कारण बता पा रहे हैं न अपनी कोई प्रतिक्रिया ही सरकार की बेरुखी पर व्यक्त कर रहे हैं। कहीं सरकार के पास धनखड की कोई कमजोर नब्ज़ तो नहीं है जिसे दबाकर सरकार उन्हें बोलने से रोक रही है?

सतपाल मलिक ने यदि कोई गलती की तो यही कि पद छोड़ते ही उन्होंने प्रधानमंत्री और गृह मंत्री के विरुद्ध बयान देने प्रारंभ कर दिए और कई सार्वजनिक सभाओं में खुलकर अपनी बात कही। उन्होंने सोशल मीडिया में कई इंटरव्यू भी दिए और उसमें भी सरकार पर किसान विरोधी होने का खुला आरोप लगाया । उन्होंने जम्मू कश्मीर के राज्यपाल के रूप में 300 करोड़ की रिश्वत देने की पेशकश का आरोप भी कुछ भाजपा नेताओं पर लगाया। इस शिकायत की जांच करने के स्थान पर सरकार ने मलिक के विरुद्ध सब केंद्रीय जांच एजेंसियों को लगा दिया।

संभवतया सतपाल मलिक के साथ सरकार द्वारा किए गएअपमानजनक व्यवहार को देखते हुए ही जगदीप धनखड ने चुप रहने में ही अपनी भलाई समझी। यदि वे खुलकर अपनी बात कहते और सरकार के प्रकोप की परवाह नहीं करते तो वे बडे किसान नेता के रूप में सम्मान प्राप्त कर सकते थे। लगता है उनके मन में सरकार द्वारा प्रताड़ित किए जाने का भय कुछ अधिक ही बैठ गया था। सरकार के पक्ष में कार्यवाही करने और प्रधानमंत्री के समक्ष नतमस्तक होने के कारण उनकी सार्वजनिक छवि जितनी खराब हुई थी, अपनी बात खुल कर सामने रखने पर उनकी छवि में कुछ सुधार संभव था। यह भी संभव है कि किसानों की बात खुलकर करने पर वे किसान नेता के रूप में अधिक प्रतिष्ठापित हो पाते । दुर्भाग्यवश, अब तक उन्होंने यह रास्ता नहीं अपनाया है। शायद उन्हें ऐसा लगा हो कि प्रधानमंत्री और गृहमंत्री के विरुद्ध कही गई किसी भी बात को सहन नहीं किया जाएगा और उनको प्रताड़ित करने की कार्यवाही बदले की भावना से की जाएगी।

धनखड के इस्तीफे को 20 दिन हो गए हैं और अब तक सरकार और स्वयं उनके द्वारा एक शब्द भी नहीं कहा गया है। किसी बडे नेता का अचानक सार्वजनिक जीवन से गायब हो जाना, सैन्य शासकों के राज्य में या अफ्रीकी देशों में तो होता आया है किंतु भारत जैसे लोकतंत्र में इस प्रकार की घटना पहले ही है। सरकार को यह बताना चाहिए कि कोई भी नागरिक उनसे जाकर मिल सकता है। सरकार को किस बात का डर है, यह पता नहीं । यह आवश्यक है कि सरकार धनखड के स्वास्थ्य के बारे में एक बुलेटिन जारी करे ताकि अफवाहों पर विराम लग सके।

इस पूरे प्रकरण में मीडिया और विपक्ष की भी भूमिका अब तक बहुत अच्छी नहीं रही है ।मीडिया में न तो इस विषय पर कोई सार्वजनिक चर्चा आयोजित की गई, न ही सरकार से प्रश्न पूछे गए। यह जानने का भी प्रयास नहीं किया गया कि पूर्व उपराष्ट्रपति इस समय कहां और किस हालत में हैं ? विपक्ष ने अवश्य इस बारे में बात उठाई है किंतु वह भी उतने जोर शोर से नहीं उठा पाया है जितनी आवश्यकता थी। सोशल मीडिया के माध्यम से प्रमुख विधि वेत्ता और सांसद कपिल सिब्बल द्वारा धनखड प्रकरण के बारे में सरकार से कई सवाल किए गए हैं और अनेक आशंकाएं भी व्यक्त की हैं। उन्होंने तो सत्यता जानने के लिए एफ आई आर तक दर्ज कराने की बात कही है। सतपाल मलिक का अंतिम संस्कार राजकीय सम्मान से नहीं करने पर एवं सरकार द्वारा किए जा रहे हैं व्यवहार की आलोचना भाजपा नेता कृष्ण कुमार जानू ने की, तो उन्हें पार्टी से निकाल दिया गया । ऐसी हालत में कौन धनखड से मिलने का प्रयास करेगा या उनके साथ किए जा रहे व्यवहार के बारे में सवाल करने का साहस करेगा?

कुल मिलाकर सरकार द्वारा पूर्व उपराष्ट्रपति धनखड के साथ किया गया व्यवहार लोकतंत्र की परंपरा और मर्यादा के अनुकूल नहीं है और इसीलिए इसे कतई शोभनीय नहीं कहा जा सकता।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की दृष्टि में पुरुषत्व और स्त्रीत्व का पूरक स्वरूप

डॉ. निमिषा गौड़

डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने 27 सितंबर 1925 को विजयादशमी के दिन नागपुर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की नींव रखी। संघ एक सामाजिक-सांस्कृतिक संगठन है। संघ का उद्देश्य भारत के सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा, व्यक्तियों के चरित्र निर्माण, समाज में एकता और समरसता बढ़ाने तथा राष्ट्र के प्रति निष्ठा और सेवा भाव का जागरण करना है। संघ ने शाखाओं के माध्यम से हिन्दू समाज को संगठित करने का कार्य किया। शाखा को व्यक्ति के मानसिक, शारीरिक और चारित्रिक विकास की कार्यशाला कहा जा सकता है। यहीं से मातृभूमि के लिए समर्पित व्यक्तित्व का निर्माण होता है।

संघ का आधार वाक्य है 'संघे शक्ति कलौ युगे', अर्थात कलियुग में शक्ति संगठन में है। संगठित समाज ही सशक्त समाज होता है। इस संगठन की आधारशिला है स्त्री और पुरुष का एकात्मक, समरस और पूरक संबंध। हिंदू समाज ने अर्धनारीश्वर के रूप में स्त्री और पुरुष की समानता एवं सह-अस्तित्व को साकार रूप में स्वीकार किया है। यह रूप केवल प्रतीक नहीं, बल्कि भारतीय दृष्टिकोण का जीवंत दर्शन है। इसमें स्त्री और पुरुष दोनों मिलकर एक पूर्ण सत्ता का निर्माण करते हैं। भारतीय चिंतन में पूरा ब्रह्मांड एक ही चेतना की अभिव्यक्ति है, जिसमें स्त्री और पुरुष की आत्मा भिन्न नहीं, बल्कि एक ही है। स्त्री सृजन की शक्ति है, उसके संस्कारों से ही पुरुषत्व का निर्माण होता है। वह परिवार, समाज और राष्ट्र की धुरी है। उसके बिना समाज अधूरा है।

भारतीय संस्कृति की सबसे विलक्षण विशेषता यह है कि उसने जीवन को द्वंद्व के रूप में नहीं, बल्कि समरसता और पूरकता के रूप में देखा है। स्त्री और पुरुष को विरोधी नहीं, बल्कि परस्पर सहयोगी और पूरक माना गया है। इसी समन्वयी दृष्टिकोण का मूर्त रूप हमें अर्धनारीश्वर के दिव्य प्रतीक में दिखाई देता है, जहाँ शिव और शक्ति, पुरुष और स्त्री एक ही देह के दो समान महत्वपूर्ण अर्धभाग हैं। स्त्री और पुरुष की आत्मा एक ही ब्रह्मचेतना की दो अभिव्यक्तियाँ हैं।

संघ का यह स्पष्ट मत है कि समाज की स्थिरता और समरसता तभी संभव है जब स्त्री और पुरुष का संबंध प्रतियोगिता नहीं, पूरकता पर आधारित हो। पुरुषत्व की पूर्णता स्त्रीत्व के साथ जुड़कर ही संभव होती है। स्त्री केवल सहचरी नहीं, वह सृजन की शक्ति है, संस्कारों की जननी है। वह परिवार, समाज और राष्ट्र की नींव में वह मौन, मगर अटूट आधारशिला है जिस पर सभ्यता खड़ी होती है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मानता है कि एक मजबूत और जागरूक समाज ही एक समर्थ राष्ट्र का आधार बन सकता है। संघ जाति, वर्ग, भाषा, क्षेत्र आदि भेदभावों से ऊपर उठकर संपूर्ण समाज को संगठित करने का कार्य करता है, जिससे भारत को पुनः वैभवशाली राष्ट्र बनाया जा सके। संघ का दर्शन समाज के एकात्म स्वरूप पर आधारित है। स्वयंसेवक समाज और परिवार की रीति-नीति का पालन करते हुए राष्ट्र सेवा में निरंतर लीन रहता है। संघ मानता है कि राष्ट्रभक्ति केवल शिक्षा से नहीं, बल्कि परिवार से प्राप्त संस्कारों और मानवीय मूल्यों से उत्पन्न होती है। परिवार समाज की सबसे महत्वपूर्ण इकाई है, और स्त्री परिवार संचालन का केंद्र। वह त्याग, ममता, स्नेह और प्रेरणा का मूर्त रूप है। संघ का यह स्पष्ट दृष्टिकोण है कि पुरुष और स्त्री के सह-अस्तित्व पर ही सुगठित समाज और राष्ट्र की नींव टिकती है।

मातृशक्ति ही राष्ट्र निर्माण की प्रेरणा है

संघ के द्वितीय सरसंघचालक, पूजनीय गुरुजी गोलवलकर जी ने अपने लेखन में माता, मातृभूमि और जगत जननी को व्यक्ति निर्माण की प्रक्रिया में केंद्रीय भूमिका दी है। जिस प्रकार प्रकृति में पेड़, पौधे, पशु, मानव सभी परस्पर जुड़े होते हैं, उसी प्रकार स्त्री और पुरुष का सह-अस्तित्व ही समाज की पूर्णता है।

सह-सरकार्यवाह कृष्ण गोपाल जी के अनुसार- स्त्री धारण करती है, इसलिए धारिणी है; जन्म देती है, इसलिए जन्मदायिनी है; मातृत्व प्रदान करती है, इसलिए माता है। ऋग्वेद की ऋषिकाएं जैसे घोषा, उपाली, सावित्री, वाक् आदि इस बात का प्रमाण हैं कि वैदिक काल में स्त्री न केवल शिक्षित, बल्कि वेद लेखन में भी अग्रणी रही हैं। विवाह व्यवस्था की अवधारणा भी सबसे पहले सूर्य-सावित्री जैसी ऋषिकाओं ने दी थी। ऋग्वेद और अथर्ववेद में विवाह से जुड़े मंत्र इस बात का प्रमाण हैं कि भारतीय परंपरा में स्त्री को कुटुंब की महारानी का स्थान प्राप्त है।

शास्त्रार्थ से लेकर रामायण की कैकेयी और महाभारत की द्रौपदी तक भारतीय स्त्री ने साहस, विद्वत्ता और आत्मसम्मान का परिचय दिया है। कालीबाई से लेकर रानी लक्ष्मीबाई तक, भारत की स्त्री शक्ति ने शिक्षकों, संस्कृति और राष्ट्र की रक्षा में स्वयं को समर्पित किया है। राजस्थान की एक विश्नोई महिला द्वारा एक स्तन से अपने शिशु और दूसरे से हिरण के बच्चे को दूध पिलाने की घटना वात्सल्य की चरम अभिव्यक्ति है, जो केवल भारतवर्ष में संभव है। विदेशी आक्रांताओं के कालखंड में स्त्री के प्रति सामाजिक असंतुलन उत्पन्न हुआ। यह गौरवशाली परंपरा ही संघ के आदर्शों का आधार है, जिसके तहत हिन्दू समाज के संगठन और नव निर्माण का लक्ष्य संघ ने अपनाया है।

राष्ट्र सेविका समिति की स्थापना से स्त्री संगठन की पहल की गई

संघ के प्रारंभिक काल में ही लक्ष्मीबाई केलकर जी ने डॉक्टर हेडगेवार जी से यह प्रश्न किया कि पुरुषों की तरह महिलाओं को संगठित करने की योजना क्या है? डॉक्टर जी ने उन्हें प्रोत्साहित किया और वर्ष 1936 में राष्ट्र सेविका समिति की स्थापना हुई। उद्घोष था- मेरा गुरु परम पवित्र भगवा ध्वज। मातृशक्ति के संगठन द्वारा तेजस्वी हिंदू राष्ट्र के पुनर्निर्माण का कार्य प्रारंभ हुआ। आज जब संघ शताब्दी वर्ष की ओर बढ़ रहा है, राष्ट्र सेविका समिति ने 89 वर्षों की गौरवपूर्ण यात्रा पूर्ण कर ली है। समिति संघ के उद्देश्यों को लेकर ही कार्य करती है।

संघ में मातृशक्ति का निरंतर सम्मान

मातृशक्ति का सहभाग सतत रहा है। संघ का स्पष्ट मत है कि समाज का संगठन पुरुष और स्त्री दोनों के संतुलन से ही संभव है। पश्चिमी दृष्टिकोण जहाँ स्त्री-पुरुष को अलगाव की दृष्टि से देखता है, वहीं भारत का दृष्टिकोण समरसता और सह-अस्तित्व का है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि कुछ राजनीतिक दलों और विचारधाराओं ने भारतीय स्त्री की छवि को विकृत कर प्रस्तुत किया है, जबकि भारत की संस्कृति में स्त्री को देवत्व का स्थान प्राप्त है।

वर्ष 2008 में संघ की प्रतिनिधि सभा ने महिलाओं पर हो रहे अत्याचारों, शोषण और भेदभाव पर चिंता व्यक्त की तथा सरकार से उनके संरक्षण और सशक्तिकरण के लिए प्रभावी कदम उठाने की मांग की थी। संघ का कार्य किसी एक वर्ग या लिंग तक सीमित नहीं है। प्रचारक हो या गृहस्थ स्वयंसेवक सभी, माँ के संस्कारों से पोषित होकर, माँ भारती की सेवा को ही अपना जीवन-ध्येय मानते हैं। यही संघ का आत्मबोध है। समरसता और सह-अस्तित्व ही राष्ट्र की शक्ति है भारतीय संस्कृति की आत्मा है अनेकता में एकता। स्त्री और पुरुष के समरूप, समांतर और सह-अस्तित्व आधारित संबंध ही उस संस्कृति की नींव हैं। इसी समरस दृष्टिकोण को संघ अपने चरित्र निर्माण के प्रयासों से निरंतर पुष्ट करता आ रहा है। संघ के अखिल भारतीय कार्यक्रम में दशहरा पर्व पर वर्ष 2022 में पद्मश्री संतोष यादव को मुख्य अतिथि के लिए आमंत्रित किया गया था इसी दौरान परम पूजनीय सरसंघचालक मोहन भागवत जी ने विजयादशमी के समारोह में स्पष्ट किया कि संतोष यादव जी से पूर्व में भी स्त्री शक्ति राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यक्रमों में अतिथि स्वरूप में आयी है, आपातकाल (1975-77) के दौरान राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यक्रम में अनुसुयाबाई काले को अकोला के कार्यक्रम में और तत्कालीन स्वास्थ्य मंत्री रही कांग्रेस की नेता राजकुमारी अमृत कौर मुख्य अतिथि के रूप में आई थी।

अंततः संघ की दृष्टि में स्त्री पुरुष दोनों की समान भागीदारी से ही समाज और राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित होती है यह संबंध ही भारतीय संस्कृति का शाश्वत संदेश भी है। हिंदू तन-मन, हिंदू जीवन, रग-रग हिंदू मेरा परिचय- यह गीत संघ का भाव नहीं, बल्कि उस संकल्प की अभिव्यक्ति है जो माँ भारती के चरणों में पूर्ण समर्पण का प्रतीक है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि कुछ राजनीतिक दलों और विचारधाराओं ने भारतीय स्त्री की छवि को विकृत कर प्रस्तुत किया है, जबकि भारत की संस्कृति में स्त्री को देवत्व का स्थान प्राप्त है।

अंततः संघ की दृष्टि में स्त्री पुरुष दोनों की समान भागीदारी से ही समाज और राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित होती है यह संबंध में ही भारतीय संस्कृति का शाश्वत संदेश भी है। हिंदू तन-मन, हिंदू जीवन, रग-रग हिंदू मेरा परिचय- यह गीत संघ का भाव नहीं, बल्कि उस संकल्प की अभिव्यक्ति है जो माँ भारती के चरणों में पूर्ण समर्पण का प्रतीक है।

–डॉ. निमिषा गौड़,
असिसटेन्ट प्रोफेसर
कनोड़िया पी. जी. महिला महाविधालय, जयपुर।

प्रदेश के 31अपर प्राइमरी स्कूल सीधे सीनियर सेकेण्डरी स्कूल बने

बीकानेर, (निसं)। शिक्षा विभाग ने तय कर लिया है कि राजस्थान में अब एक भी सरकारी सेकेंडरी स्कूल नहीं होगा। अपर प्राइमरी स्कूल के बाद सीधे सीनियर सेकेंडरी स्कूल ही होंगे। प्रदेश के 31 सरकारी अपर प्राइमरी स्कूल को सेकेंडरी के बजाय अब सीधे सीनियर सेकेंडरी में क्रमोन्नत (अपग्रेड) कर दिया गया है। इससे स्कूल में पढ़ रहे स्टूडेंट्स को 8वीं क्लास के बाद स्कूल नहीं बदलना पड़ेगा। एक बार प्रवेश लेने के बाद स्टूडेंट्स एक ही स्कूल में अपनी स्कूली शिक्षा पूरी कर सकेंगे। इससे अभिभावकों और बच्चों को 8वीं कक्षा, 10 वीं कक्षा के बाद स्कूल बदलने के झंझट से छुटकारा मिल सकेगा। फिलहाल इन 31 स्कूल में कक्षा 9 और 10 ही शुरू हो सकेंगे। अगले साल बिना किसी स्वीकृति के सीधे क्लास 11 व 12 की पढ़ाई शुरू हो जाएगी। माध्यमिक शिक्षा निदेशक सीताराम जाट ने इस संबंध में 9 अगस्त की देर शाम को आदेश जारी किए हैं।

■ **स्कूल में पढ़ रहे स्टूडेंट्स को 8वीं क्लास के बाद स्कूल नहीं बदलना पड़ेगा**

राजस्थान की सरकारी स्कूल में पढ़ रहे स्टूडेंट्स को 8वीं कक्षा के बाद स्कूल नहीं बदलना पड़ेगा। एक बार प्रवेश लेने के बाद स्टूडेंट्स एक ही स्कूल में अपनी स्कूली शिक्षा पूरी कर सकेंगे। पूर्व में गहलोत सरकार ने प्रदेश के सभी सेकेंडरी स्कूल को एक ही आदेश में सीनियर सेकेंडरी कर दिया था। इसके बाद तो सेकेंडरी स्कूल से हेडमास्टर का पद ही खत्म हो गया था। ऐसे में भविष्य में भी जो अपर प्राइमरी स्कूल क्रमोन्नत होंगे, वो सीधे सीनियर सेकेंडरी में ही क्रमोन्नत होंगे।

माध्यमिक शिक्षा निदेशक के आदेश में कहा गया है कि सभी नए क्रमोन्नत स्कूल इसी सत्र में शुरू हो जाएंगे। स्वीकृति के वर्ष में कक्षा 9 व 10 को एक साथ प्रारम्भ किया गया है। अगले साल कक्षा 11 व 12 शुरू हो सकेंगे। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर से मान्यता के लिए जल्दी ही औपचारिकता पूरी की जाएगी। इन स्कूल में वर्तमान में कार्यरत प्रधानाध्यापक, वरिष्ठ अध्यापक को उसके विषय के आधार पर उसी स्कूल में समायोजित किया जाएगा। इसी तरह अपर प्राइमरी के शारीरिक शिक्षक को सीनियर सेकेंडरी स्कूल के शारीरिक शिक्षक पद पर समायोजित किया जाएगा। इन स्कूल में कार्यरत लेवल वन व लेवल टू के टीचर्स को फिलहाल इसी स्कूल में रखा जाएगा। वेतन भी इसी स्कूल से दिया जाएगा।

भूमाफिया ने पुश्तैनी मकान को तोड़ा, एक महिने से पीड़ितों का धरना जारी

पीड़ित भैरूराम सैनी ने प्रशासन पर किसी तरह की कोई कार्रवाई नहीं करने का आरोप लगाया

पावटा, (निसं)। कस्बा पावटा स्थित किले ऊपर मालियों की ढाणी निवासी भैरुराम सैनी के पुश्तैनी मकान को जेसीबी से ध्वस्त कर दिया। मामले में पीड़ित भैरूराम सैनी ने बताया कि भूमाफियों द्वारा उनके पुश्तैनी मकान पर कब्जा करने के इरादे से उनके मकान को जेसीबी मशीन से तोड़ दिया गया है। मामले को लेकर पीड़ित परिवार सहित करीब एक महीने से दिन-रात धरने पर बैठा है, लेकिन पुलिस प्रशासन द्वारा कोई सुनवाई नहीं हो रही है।

■ **पीड़ित ने थाने में ही नहीं बल्कि कलेक्टर, एसपी और उपखंड अधिकारी पावटा तक शिकायत की है**

पीड़ित भैरूराम सैनी ने बताया कि प्रागपुरा थाने में इस घटना को लेकर मामला भी दर्ज करवाया गया था लेकिन अभी तक पुलिस द्वारा आरोपियों को गिरफ्तार नहीं किया गया है। पीड़ित भैरूराम सैनी ने बताया कि उन्होंने सिर्फ स्थानीय थाने में ही नहीं, बल्कि कलेक्टर, एसपी और उपखंड अधिकारी पावटा तक शिकायत की है। इसके बावजूद अभी तक प्रशासन या पुलिस की तरफ से कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया। इस वजह से पीड़ित परिवार का डर और निराशा दोनों बढ़ गए हैं। भैरूराम सैनी का कहना है कि पुलिस उनकी शिकायत को गंभीरता से नहीं ले रही है, जिससे आरोपियों के हौसले बढ़ते जा रहे हैं। पीड़ित परिवार ने जिला प्रशासन से मांग की है कि इस मामले की निष्पक्ष जांच की जाए और दोषियों पर सख्त कार्रवाई हो, ताकि उन्हें न्याय मिल सके और भविष्य में ऐसी घटनाएं फिर न हों। स्थानीय लोग मुकेश कुमार सैनी, मूलचंद, श्रीराम, प्रमोद, विक्रम, ख्याली राम, नरेश, बनवारी लाल, शेर सिंह, महेंद्र, कमलेश, जयराम, श्यामसुंदर सहित स्थानीय लोगों का कहना है कि अगर ऐसे लोगों को समय पर नहीं रोका गया तो और भी लोग खतरे में पड़ सकते हैं। प्रशासन और पुलिस की निष्क्रियता के कारण लोगों में नाराजगी बढ़ रही है और पीड़ित परिवार न्याय के लिए भटकने को मजबूर हैं।

दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिये प्रशासन सक्रिय

पावटा, (निसं)। उपखंड पावटा में राष्ट्रीय राजमार्ग 48 पर सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के उद्देश्य से प्रशासन ने सख्त कदम उठाने शुरू कर दिए हैं। सोमवार को पावटा कस्बा क्षेत्र में संभावित दुर्घटना स्थलों की पहचान कर उन्हें चिन्हित किया जा रहा है। इस अभियान के तहत स्थानीय अधिकारियों के साथ मिलकर एक संयुक्त निरीक्षण टीम ने उपखंड पावटा में राष्ट्रीय राजमार्ग 48 का निरीक्षण किया। इस दौरान एनएएचआई, पीडब्लूडी, तहसीलदार, परिवहन और लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों के साथ वृत्ताधिकारी वृत्त विराटनगर शिप्रा राजावत ने राष्ट्रीय राजमार्ग 48 उपजिला अस्पताल पावटा कट जैसे प्रमुख स्थानों का दौरा किया, जहां पूर्व में कई गंभीर सड़क हादसे हो चुके हैं।

राशिफल

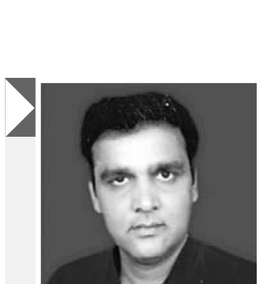

पंडित अनिल शर्मा

मंगलवार 12 अगस्त, 2025

भाद्रपद मास, कृष्ण पक्ष, तृतीया तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2082, पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र दिन 11:52 तक, सुकर्मा योग सायं 6:45 तक, विष्टि करण प्रातः 8:41 तक, चन्द्रमा प्रातः 6:10 से मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-कन्या, बुध-कर्क, गुरू-मिथुन, शुक्र-मिथुन, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग दिन 11:52 से सूर्योदय तक है। भद्रा प्रातः 8:41 तक रहेगी। आज सातुड़ी तीज, कजली तीज और अंगारक संकष्ट चतुरथी व्रत, पंचक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:16 से 10:54 तक, लाभ-अमृत 10:54 से 2:10 तक, शुभ 3:47 से 5:25 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 6:00, सूर्यास्त 7:03

मेष
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। मन में असंतोष बना रहेगा। व्यावसायिक परेशानियां अभी बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी।

वृष
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिल सकती है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

सिंह
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। धन हानि का भय है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कन्या
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

धनु
घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

मकर
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को मानसिक तनाव रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। वाणी पर संयम रखना ठीक रहेगा।

मीन
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।